RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.057

भारत के निर्माण में सरदार पटेल का योगदान व उनके विचारों की प्रासंगिकता

युगेश कुमार
एम. ए., नेट (इतिहास)

भूमिका

सरदार वल्लभ् भाई पटेल की देष सेवा, समाज सेवा के साथ–साथ राष्ट्र–भक्ति और अपनी दृढ़ता, आत्मबल, संकल्प शक्ति, अटल शक्ति, दृढ़ विष्वास एवं कार्य के प्रति लगन के कारण ही इन्हे 'लौह–पुरूष' के रूप में जाना जाता है।

31 अक्टुबर 1875 को गुजरात के खेड़ा में जन्में सरदार बल्लभ भाई पटेल एक साधारण किसान परिवार से थे। बचपन से कड़ी मेहनत और निडरता की उनकी विषिष्टता नें 1910 में वकालत की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की, जिनके लिये उन्हें 750रू का पुरस्कार भी मिला। सरदार पटेल सन् 1917 से देष की सक्रिय राजनीति में आयें। जालियाँवाला–बाग काण्ड (1919) के विरोध में उन्होनें बैरिस्ट्री त्यागी और 1920 में महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलन से प्रभावित होकर बारदोली चले गये जहाँ अपनी पूरी जिन्दगी भारत को आजादी दिलाने में बिताई।

स्वतंत्रता् आन्दोलन व देष सेवा में उनका योगदान

खेड़ा संधर्ष(1918)– सरदार पटेल का पहला संधर्ष खेड़ा खण्ड (गुजरात) में हुआ। जहां सूखे की चपेट में आयें किसानों को सरकार के 'कर' से मुक्त करने के लिये नेतृत्व किया। अन्ततः सरकार को ही झुकना पड़ा और उस वर्ष करों में राहत दी गई। यह पटेल की पहली सफलता थी।

बरदोली सत्याग्रह(1928)– गुजरात के 'बारदोली में' जो 137 गांवों का 87,000 जनसंख्या वाला क्षेत्र था, बम्बई गवर्नर द्वारा मालगुजारी 22% बढ़ाने पर इसके विरोध में सरदार पटेल ने किसानों का नेतृत्व किया। पहले तो सरकार ने इस सत्याग्रह आन्दोलन को कुचलने हेतु कठोर कदम उठाया परन्तु, अन्ततः सरकार को किसानों की माँगे माननी पड़ी। बारदोली सत्याग्रह के इस जीत पर यहां की महिलाओं ने पटेल को 'सरदार' की उपाधि दी, जो अदम्य साहस, कठोर–निर्णय एवं संकल्प–शक्ति की उच्चता को प्रतिबिम्बित करता हैं।

देशी रियासतों का एकीकरण–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरें भारत के भू–राजनीतिक एकीकरण में केन्द्रीय भूमिका निभाने वाले सरदार पटेल को भारत का '**बिस्मार्क**' भी कहा जाता है। आजादी मिलने के बाद देष के राष्ट्र–निर्माण के समक्ष कई चुनौतियाँ थी। अंग्रेजों नें अपनी कुटील रणनीति से भारत के विखराव की योजना 'स्वतंत्रता अधिनियम्,1947' में ही तैयार कर ली थी। जब उसमें प्रावधान कर दिया गया कि भारत और पाकिस्तान दो नवोदित स्वतंत्र राष्ट्र होंगे तथा देषी रियासतों को यह स्वतंत्रता होगी कि वह चाहे तो अपना विलय भारत में अथवा पाकिस्तान में करनें का निर्णय लें अथवा स्वयं को स्वतंत्र रखने के विकल्प पर निर्णय ले।

लगभग् 600 से अधिक देषी–रियासतें अखण्ड भारत में थी और 552 के करीब ये भारतीय–क्षेत्र में आती थी। यदि रियासतें स्वतंत्र होती तो भारत के राजनीतिक नक्षे 'चलनी' के रूप में छिद्रदार दिखती। किन्तु सरदार पटेल ने जिस कुषलता और दक्षता से इन सारे देषी रियासतों का भारत में विलय करवाया वो आज भी स्मरणीय व सम्मान योग्य है। कहा जाता है कि जम्मु–कष्मीर के मामले में यदि पंडित नेहरू का हस्तक्षेप न हुआ होता तो कब का यह 'मामला' पूर्ण हो चुका होता , जिसे 05 अगस्त, 2019 को एक नये 'सरदार' के नेतृत्व वाली सरकार ने अनुच्छेद 370 द्वारा दी गई विषेष सुविधा को समाप्त कर किया।

सरदार पटेल का 'सपनों का भारत'

सरदार पटेल का योगदान 'राष्ट्र निर्माण एवं उसकी एकता व अखण्डता' के क्षेत्र मे अद्वितीय है। स्वतंत्रता के पूर्व राष्ट्रीय आन्दोलनों में उन्होनें जिस तरह महात्मा–गांधी के सत्याग्रह से जुड़कर अंग्रेज के अत्याचारों व जुल्मों का डटकर प्रतिरोध किया और कुशलता व सूझबूझ के साथ आन्दोलनों का नेतृत्व किया, वहीं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के निर्माण व उसके सपनों को साकार करने की दिषा में जो उन्होनें कदम उठाये, वह न सिर्फ स्मरणीय हैं, बल्कि यह कल्पना करने लायक है कि यदि उन्होनें सारे देषी–रियासतों को भारत के साथ पिरोकर 'एकाष्मक' स्वरूप प्रदान करने की षिल्पता प्रस्तुत न की होती तो भारत का स्वरूप क्या होता् ?

'बिस्मार्क' से उपमातित सरदार पटेल अगर निरन्तर प्रयास न करते तो आज भारत की जगह बहुत सारे देष होते, जो एक–दुसरे से सीमा् अथवा अन्य् विषयों को लेकर अन्तर्विरोध करते रहते। जम्मु–कष्मीर, हैदराबाद और जूनागढ़ ने पहलें प्रतिरोध किया और वे स्वयं को स्वतंत्र अस्तित्व में रखना चाहते थे, किन्तु पटेल के मजबूत इरादों ने स्पष्ट कर दिया कि भारत एक 'एकीकृत इकाई' बनकर रहेगा। सरदार पटेल ने कहा है कि ''एकता के बिना जनषक्ति 'षक्ति' नहीं

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है, जब तक उसे ठीक तरह से सामंजन में न लाया जाय और एकजुट न किया जाय, तब वह आध्यात्यिक शक्ति बन जाती है''।

सरदार पटेल नें एक ऐसे माहौल में काम किया जो बहुत ही कठिन था। जाति, भाषा, धर्म, नस्ल परंम्पराएं, क्षेत्र की विविधता को एकत्व में पिरोकर उसे विकास और प्रगति के पथ पर ले जाना, एक चुनौति थी जिसे पटेल ने बखुवी अपना सुझबुझ व योग्यता् से निभाया। विष्व में सबसे बड़ी जनसंख्या (1.3 अरब) के रूप में भारत का प्रभाव सरदार पटेल के योगदान के कारण है। उन्होने असंभव दिखनेवाले कार्य को उस समय अंजाम दिया जब विंस्टन चर्चिल इस उपमहाद्वीप को हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और छोटे–छोटे राजवाड़ो के रूप में बाँटना चाहते थे।

सरदार पटेल ने राष्ट्रीय एकता का एक ऐसा रूप दिखाया कि जिसे उस समय कोई सोच भी नहीं सकता था। उनके इस योगदान के कारण ही उनकी जन्म–तिथि 31 अक्टुबर को, 2014 से 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

गांधी, नेहरू, पटेल के विचारों की प्रासंगिकता

महात्मा् गांधी, जवाहर लाल नेहरू व सरदार पटेल के विचारों को लेकर जब चर्चा उठती है, तो यह साफ दिखता है कि नेहरू और पटेल दोनों ही गांधी के विचारों से प्रभावित होकर राष्ट्रीय आंन्दोलन में कुदे थे। शायद इसलिए ही ये दोनो एक कमान मे थे वरना, इन दोनो की सोच में जमीन आसमान का अन्तर था। जहां पटेल जमीन से जुड़े एक साधरण व्यक्तित्व के तेजस्वी व्यक्ति थें, वहीं नेहरू जी अमीर धरानों के नवाब थे। जमीनी हकीकत से दूर, एक ऐसे व्यक्ति जो बस सोचते थे और वही कार्य पटेल करके दिखा देते थे। शैक्षणिक योग्यता हो या व्यावहारिक सोच हो इन सभी में पटेल नेहरू से आगे थे।

आजाद भारत में इन दो बड़े नेताओं– नेहरू और पटेल– के रिष्तो की दास्तान भी अनोखी है। दोनों महान देषभक्त थे, किन्तु एक–दुसरे के प्रतिद्वन्द्वी भी। दोनों के विचारों में गहरे मतभेद थे जो उभर कर पुरी तरह सामने नहीं आया। नेहरू के अनुसार यह भारत सरकार कि जिम्मेदारी थी कि वह मुसलमानों को हिन्दुस्तान में सुरक्षित महसुस करायें, जबकि पटेल चाहते थे कि यह जिम्मेदारी खुद अल्पसंख्यक वर्ग ही उठाये।

सरदार पटेल ने 2 अक्टुबर को इन्दौर में महिला केन्द्र का उद्धाटन करते हुए इस अवसर का उपयोग प्रधानमंत्री के प्रति अपने विष्वास के प्रदर्षन में किया। उन्होनें अपने भाषण में कहा कि–वे महात्मा गाँधी के बहुत सारे अहिंसक षिष्यों में से महज एक है. पटेल ने आगे कहा कि अब चूँकि महात्मा गाँधी हमारे बीच नहीं हैं, नेहरू ही हमारे नेता हैं। बापू ने उन्हें अपना उतराधिकारी नियुक्त किया था और इसकी घोषणा भी की थी। स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं नेहरू व उपप्रधानमन्त्री सरदार पटेल में आकाष पाताल का अन्तर था। परन्तु दोनों ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी। परन्तु सरदार पटैल वकालत में नेहरू से बहुत आगे थे। उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिष साम्राज्य के विद्यार्थियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरू शास्त्रों के ज्ञाता थे तो पटेल शास्त्रों के पुजारी थे। पटेल ने भी ऊँची षिक्षा पाई थी, परन्तु उनमें किंचित मात्र भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे–''मैनें कला या विज्ञान के विषाल गगन में ऊँची उड़ानें नहीं भरीं मेरा विकास कच्ची झोंपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है।''

दरअसल ये तथ्य नेहरू के जीवनीकार सर्वपल्ली गोपाल की उसी बात को स्पष्ट करते हैं कि जो उन्होंने भावुक होकर व्यक्त की थी। उन्होंने कहा कि पटेल के महान आत्मसंयम और शराफत ने दोनों के बीच होने वाली खुली लड़ाई को रोक दिया। पटेल को गाँधी जी से किया हुआ अपना वह वादा याद था, जिसमें उन्होनें नेहरू के साथ काम करने की बात कहीं थी। इसके साथ–साथ काँग्रेस अध्यक्ष पर विवाद के वक्त उनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था। बिस्तर पर लेटे–लेटे ही उन्होंने 14 नवम्बर को नेहरू के जन्मदिन पर उन्हें बधाईं पत्र लिखा एक सप्ताह बाद जब प्रधानमन्त्री उनसे मिलने आए तो पटेल ने कहा कि जब मेरा स्वास्थ्य थोड़ा ठीक हो जायेगा तो मै आपसे अकेले मे बात करना चाहता हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है कि आप मुझसें अपना विष्वास खोते जा रहे हैं।

इसके जवाब में नेहरू ने कहा कि मुझे लगता है कि मैं अपने आप में यकीन खोता जा रहा हूँ इसके तीन सप्ताह बाद 15 दिसम्बर, 1950 को सरदार पटेल कि मृत्यु हो गई और यह लौह पुरूष दुनिया को अलविदा कह गया और इतिहास के पन्नों पर हमेषा के लिए अमर हो गया। नेहरू ने एक एकीकृत और मजबूत भारत के निर्माण में पटेल की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया साथ ही राजवाड़ों की जटिल समस्या सुलझाने में भी उनकी प्रतिभा की सराहना की। पटेल, नेहरू के एक सहयोगी भी थे और एक प्रतिद्वन्द्वी भी। लेकिन अपने देषवासियों के लिए पटेल एक महान देषभक्त, आजादी की लड़ाई के बेजोड़ योद्धा, महान जनसेवक, महान प्रतिभा और विराट उपलब्धियों वाले राजनीतिज्ञ थे। पटेल ने अपने एतिहासिक कार्यो में सोमनाथ के मन्दिर निर्माण भी करवाया।

इस तरह सरदार पटेल उपप्रधानमंत्री तथा देष के गृह–मंत्री के रूप में पहले व्यक्ति थे, जिन्होने भारतीय नागरिक सेवाओं (I.C.S.) का भारतीयकरण करके भारतीय प्रषासनिक सेवा (I.A.S) नाम दिया। उन्होनें अंग्रेजों की अब तक सेवा करनेवाले प्रषासकों में विष्वास भरकर उसे राजभक्ति से देषभक्ति की ओर मोड़ने का प्रयास किया। यदि कुछ दिन ये और जीवित रह जाते तो संभवतः नौकरषाही का तो पूर्ण कायाकल्प हो जाता। उसी तरह यह भी माना जाता है कि

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नेहरू यदि पटेल के कहने पर चलते तो कष्मीर, चीन, तिब्बत, नेपाल तथा पाकिस्तान के साथ जो हालात सीमा को लेकर है, वह न होता । भारत का इतिहास हमेषा महान साहसी, निर्भयी, अनुषासित, अटल व संकल्पित मानव को याद रखेगा। अनेक विद्वानों का यह कहना कि सरदार पटेल विस्मार्क की तरह थे, लेकिन लंदन के टाइम्स, ने लिखा था कि ''विस्मार्क की सफलताएं पटेल के सम्मुख महत्वहीन रह जाती है।''

संदर्भित सूची :–

(1) नागोरी, एस. एल. (डॉ) – आधुनिक भारत।
– भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन।
– भारत के स्वतंत्रता सेनानी।
(2) परमात्मा शरण – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन
(3) रॉबर्ट्स, पी0 ई0 – ब्रिटिष कालीन भारत का इतिहास।
(4) देसाई, ए0, आर0 – भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक प्र।
(5) ताराचन्द (डॉ) – भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन का इतिहास, खण्ड 1–4
(6) बोस, एस0. के0. – आधुनिक भारत के निर्माता।

RRIJM 2015, All Rights Reserved